विहान प्रशिक्षण केंद्र

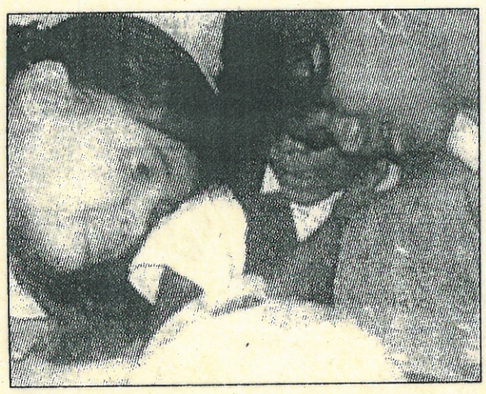

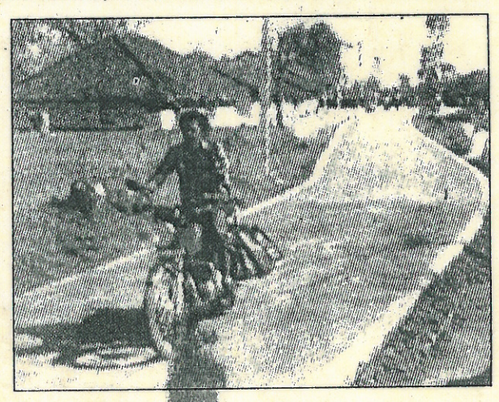

हमारे देश के वृहद मानव एवं प्राकृतिक संसाधनों का केंद्र गांव है. ग्राम्य जन को विकास के प्रयासों में हर रफ्तार पर भागीदार बनाकर ही टिकाऊ या सम्पूर्ण विकास के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है. इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए ग्राम्यजन की क्षमता का संवर्धन किया जाना आवश्यक है. इस विचार को आधार में रखकर देवास जिले के कन्नौद ब्लाक के एक छोटे गांव गोला गुठान की सीमा पर साढ़े तीन एकड़ भूमि पर एक ऐसे केंद्र की स्थापना की गई, जहां स्थानीय पारिस्थितिकी और प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता के आधार पर अपने गांव की विकास योजना ग्रामवासी स्वयं बना सके. इस हेतु ग्राम्यजन की क्षमता संवर्धन का कार्य सतत जारी है.

सूचना संवाद एवं प्रशिक्षण के माध्यम से ग्रामीण जनशक्ति की क्षमता का संवर्धन कर उन्हें ग्रामीण विकास हेतु योजना बनाने से लेकर क्रियान्वयन तक की प्रक्रिया में लोगों को भागीदार बनाना ही इस केंद्र का उद्देश्य है. इस केंद्र का वृहद लक्ष्य यह है कि एक गांव सभी आयामों में विकसित हो. वह आर्थिक रूप से समृद्ध बने, भौतिक रूप से समृद्ध बने, सामाजिक रूप से संगठित हो और सबसे ऊपर मानसिक रूप से उन्नत हो. वस्तुतः संतुलित विकसित सूचना संवाद एवं प्रशिक्षण के माध्यम से ग्रामीण जनशक्ति की क्षमता का संवर्धन कर उन्हें ग्रामीण विकास हेतु योजना बनाने से लेकर क्रियान्वयन तक की प्रक्रिया में लोगों को भागीदार बनाना ही इस केंद्र का उद्देश्य है. इस केंद्र का वृहद लक्ष्य यह है कि एक गांव सभी आयामों में विकसित हो, वह आर्थिक रूप से समृद्ध बने, भौतिक रूप से सुदृढ़ बने, सामाजिक रूप से संगठित हो और सबसे ऊपर मानसिक रूप से उन्नत हो. वस्तुतः संतुलित विकास ही सम्पूर्ण विकास होगा. संयोग से यही गोकुल गांव की अवधारणा भी है.

सूचना की शक्ति के महत्व को स्वीकारते हुए यह केंद्र न केवल परिधि में आने वाले बीस-बाईस गांवों का सूचना केंद्र बना है, बल्कि विभिन्न जिलों के दूरस्थ गांव, जो किसी माध्यम से एक बार इस केंद्र से जुड़े हैं वे भी इसके सूचना माध्यमों से जुड़े हैं. जन उपयोगी सूचनाओं के प्रसारण के लिए प्रत्येक माह की अमावस्या व पूर्णिमा को (चंद्र कैलेण्डर की तिथियां) होने वाली अनौपचारिक सभाओं, पत्र व्यवहार आदि माध्यमों का उपयोग होता है. मासिक विशेष सभा में कानूनविद्, स्वास्थ्य विशेषज्ञ अथवा विभाग विशेष के अधिकारियों के सहयोग से ग्रामीणजन की समस्याओं से निपटने के रास्ते खोजे जाते हैं. उजास (उन्मुखीकरण, जागरूकता एवं संवाद हेतु पत्र) दूर दराज तक के गांवों से सम्पर्क का माध्यम है. आधुनिक विज्ञान और स्थानीय ज्ञान के समन्वय के लिए विहान में विशेषज्ञों और किसानों, हस्तशिल्पियों, कुटीर उद्योगियों के बीच संवाद सभाओं का आयोजन होता है.. उल्लेखनीय है कि कृषि और प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित विभिन्न नई तकनीकों व आयमूलक गतिविधियों की इकाइयां भी यहां कार्यरूप में हैं. मानव क्षमता संवर्धन के प्रयासों के अंतर्गत यहां वर्षभर विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों का संचालन किया जाता है. गुरुकुल पद्धति का जीवन और अत्याधुनिक प्रशिक्षण तकनीकों के समन्वय से यह केंद्र ग्रामीण विकास विषयक विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन कर रहा है.

यह केंद्र और इसकी मातृ संस्था विभावरी व्यक्ति मात्र में छिपी क्षमता में विकास करते हैं.

अमंत्रो अक्षरौ नास्ति
न मूलं अनौषधमयम
निर्गुणां पुरुषो नास्ति
योजकः तत्र दुलभः

ऐसा कोई अक्षर नहीं जिससे, मंत्र न बनता हो और ऐसी कोई मूल-जड़ नहीं जिसमें औषधीय गुण न हो, संसार में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जिसमें कोई गुण नहीं, कमी है तो सिर्फ योजना बताने वाले की.

'हम बनाएंगे अपना गोकुल गांव'

कुछ छोटे-बड़े किसान, खेतिहर मजदूर और कुछ ग्रामीण हस्तशिल्पी बढ़ई, सिलावट (मिस्त्री) मिलकर विचार-विमर्श में लगे हैं. सबसे पहले तो भाई सारे गांव में शौचालय बनवाना है. हम तो कहते हैं भाई नाडेप भरवाई में जरा भी देरी की तो इस बार भी बहुत पैसा खर्चा हो जाएगा. गांव का स्वास्थ्य, सभी को रोजगार, दूध-दही का उत्पादन और सबसे ऊपर गांव का एका.... तभी तो हमारा गांव गोकुल ग्राम बनेगा भैया.

विहान में आज इस प्रशिक्षण कार्यशाला का चौथा और अंतिम दिन है. आज तो गांव के विकास की पूरी कार्ययोजना तैयार हो रही है. आज तीन बार भोजन की घंटी बज चुकी, पर कोई काम अधूरा छोड़कर जाने को तैयार नहीं. मानव विकास की ग्राम्य संस्था 'विहान' में यह मानव क्षमता विकास का कार्य पिछले तीन माह से सतत जारी है. कुछ जिलों के किसान यहां आ रहे हैं और संकल्पवान, ग्राम सरता बनकर लौट रहे हैं.

हर चार दिवसीय इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का पहला दिन श्रम करने वाले ग्राम्यजन और प्रशिक्षक दोनों के लिए चुनौती भरा होता है. गेहूं में पानी का समय, कटाई और रोज कमाकर रोज खाने वाले मजदूरों के लिए यह समझना कठिन होता है कि कोई सरकारी योजना अगर उनके गांव में आई भी हो तो इसके लिए उन्हें प्रशिक्षण प्राप्त करने की क्या जरूरत है.

परिचय, फिर घनिष्ठ परिचय और अपनापन तक की यात्रा एवं उसमें कई पड़ाव होते हैं. शुरुआत होती है शासन पर दोषारोपण से और अंतिम पड़ाव होता है 'हमारा गांव हम स्वयं बनाएंगे गोकुल ग्राम'. कैसे बनाएंगे ? जानकारी, चर्चा. सब माध्यमों का प्रयोग होता है बारीबारी से. कभी खेत में, कभी किसी गांव में, कभी परस्पर चर्चा, कभी खेल. न जाने कितनी दिलचस्प विधियों का प्रयोग होता है इस प्रशिक्षण में. कई सारी पूर्व धारणाएं लेकर आए ये ग्राम्यजन जब इस केंद्र से लौट रहे होते हैं, तो एक नई दृष्टि से, एक नई ऊर्जा से भरे ग्राम सखाओं का एक दल बन जाते हैं, जिनका एक ही संकल्प होता है- हमारे गांव को सच में गोकुल जैसा बनाना है. ऐसा गांव जो आर्थिक, भौतिक रूप से समृद्ध हो, सामाजिक रूप से विकसित और सबसे ऊपर मानसिक रूप से विकसित हो. यह प्रशिक्षण केंद्र अनौपचारिक, पारिवारिक वातावरण के साथ एक अनूठा अनुशासन सिखाता है. सुबह 6 बजे चाय की घंटी से दिन की शुरुआत होती है तो शाम को ध्यान कक्ष से समापन. रात को यह केंद्र ढोलक की ताल, मझीरों की झनकार और ऊंचे-ऊंचे भजन अलापों से गूंज जाता है.

पहले दिन जो परिसर में बीड़ी इत्यादि न पीने का प्रतिबंध प्रशिक्षणार्थियों को पसोपेश में डाल देता है, वहीं अंतिम दिन आंखों में पानी लिए प्रशिक्षु बीड़ी छोड़ने, गुटखा छोड़ने, यहां तक कि शराब छोड़ने का संकल्प लेते हैं. यह सब यहां इतना स्वाभाविक रूप से होता है कि यह कैसे होता है, कब होता है और क्यों इसका जवाब न विहान प्रशिक्षण दल के पास है न प्रशिक्षुओं के पास.

चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतिम दिन यह प्रशिक्षण कार्यक्रम गोकुल का आनंदोत्सव बन जाता है और प्रशिक्षु तथा प्रशिक्षक स्नेह सूत्र में बंध जाते हैं. इस परिवार की एक ही जाति होती है- समाज का भला करने के लिए लोगों की जाति.

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम की विशेषता यह होती है कि समापन एक नई शुरुआत होता है. कार्ययोजना इस नई शुरुआत का दस्तावेज होता है. यह दस्तावेज खुद प्रशिक्षु मिलकर तैयार करते हैं. इसमें शौचालय पहले किन दस घरों में बनेगा, कैसे बनेगा और इससे जुड़ी बीसों बातें बैठकर तय करके लिखी जाती है. ऐसे कई छोटे-बड़े काम करने की तिथि भी नियत की जाती है और इस कार्ययोजना का उल्लेखनीय बिंदु यह होता है कि सत्तर फीसदी कार्य गांव अपने जिम्मे लेता हैं और जिन कामों में वह सरकार से मदद मांगते हैं उसमें भी जनसहयोग की योजना बनाते हैं.

विदाई के समय एक ओर भारी मन तो दूसरी ओर जिम्मेदार का उत्साह छलका पड़ता है. हम यह काम जल्दी पूरा करेंगे. आप कब आएंगे देखने. हमारा गांव आकर देखो. एक माह बाद हम आपका इंतजार करेंगे. ऐसे सैकड़ों स्नेह निमंत्रण के साथ प्रशिक्षु इस केंद्र से बिदा लेते हैं.